CHAPTER 1

सूरदास के पद

CBSE *कक्षा* 10 · *हिंदी (पाठ्यक्रम-अ)* · *क्षितिज भाग-2* · *काव्य खंड*

CBSE · Hindi · Class 10

WHAT THIS CHAPTER DOES

A भ्रमरगीत का प्रसंग समझना — कृष्ण → उद्धव → गोपियाँ → योग-संदेश की अस्वीकृति।

B गोपियों के तर्क, व्यंग्य एवं प्रमुख प्रतीक (हारिल, भ्रमर, बड़भागी) पहचानना।

Boards prep that builds confidence, not anxiety.

TODAY'S MISSION

आज का लक्ष्य

1. भ्रमरगीत का प्रसंग समझना — कृष्ण → उद्धव → गोपियाँ → योग-संदेश की अस्वीकृति।
2. गोपियों के तर्क, व्यंग्य एवं प्रमुख प्रतीक (हारिल, भ्रमर, बड़भागी) पहचानना।
3. सगुण बनाम निर्गुण भक्ति का द्वंद्व एवं सगुण की विजय स्पष्ट करना।
4. काव्य-सौंदर्य, अलंकार एवं ब्रजभाषा की विशेषताएँ जानकर 6/7 अंक अर्जित करना।

WHY THIS MATTERS

यह पाठ क्यों महत्त्वपूर्ण है

1. क्षितिज काव्य खंड का प्रथम पाठ — पूरे वर्ष के काव्यांश-बोध एवं भाव-ग्रहण की नींव।
2. प्रति बोर्ड परीक्षा 5-7 अंक। योग-अस्वीकृति, वाक्-चातुर्य एवं काव्य-सौंदर्य के प्रश्न लगभग प्रति-वर्ष आते हैं।
3. भक्तिकाल एवं सगुण-निर्गुण धारा का परिचय — आगे की काव्य रचनाओं को समझने में सहायक।

TOPIC

A

कवि एवं प्रसंग का परिचय

TOPIC

सूरदास एवं भ्रमरगीत-प्रसंग

कवि — सूरदास

सूरदास हिंदी भक्तिकाल की सगुण-कृष्णभक्ति धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनका जन्म लगभग 1478 ई. में दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव में हुआ माना जाता है। वे महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य एवं 'अष्टछाप' के आठ कवियों में सर्वोपरि थे। उनके तीन प्रमुख ग्रंथ हैं — 'सूरसागर' (सर्वाधिक प्रसिद्ध, इसी में भ्रमरगीत है), 'सूरसारावली' एवं 'साहित्य-लहरी'। वे वात्सल्य एवं श्रृंगार रस के अप्रतिम चितेरे माने जाते हैं। परीक्षा में कवि-परिचय, ग्रंथ एवं अष्टछाप-

भ्रमरगीत क्या है

'भ्रमरगीत' सूरदास के 'सूरसागर' का वह प्रसिद्ध प्रसंग है जिसमें गोपियाँ उद्धव के माध्यम से आए श्रीकृष्ण के निर्गुण-योग संदेश का खंडन करती हैं। 'भ्रमर' (भौंरा) यहाँ उद्धव का प्रतीक है — जैसे भौंरा एक पुष्प पर टिकता नहीं, अनेक पर मँडराता है, वैसे ही गोपियाँ उद्धव की प्रेम-निर्लिप्तता पर व्यंग्य करती हैं। यह 'गीत' प्रशंसा नहीं, अपितु गोपियों के तीखे उपालंभ एवं तर्क-वाणी का संग्रह है। इसी से कक्षा 10 के चार पद लिए गए हैं।

प्रसंग — कृष्ण, उद्धव एवं गोपियाँ

श्रीकृष्ण मथुरा जाकर राजा बन जाते हैं और ब्रज लौटकर नहीं आते। गोपियाँ विरह में व्याकुल हैं। कृष्ण अपने ज्ञानी सखा उद्धव को गोपियों के पास इसलिए भेजते हैं कि वे उन्हें निर्गुण-निराकार ब्रह्म की उपासना एवं योग का उपदेश देकर शांत कर दें। परंतु गोपियाँ, जिनका मन साकार कृष्ण को अनन्य रूप से सौंपा जा चुका है, इस शुष्क ज्ञान को अस्वीकार कर देती हैं। उद्धव का अहंकार-भरा ज्ञान गोपियों के सहज प्रेम एवं तर्क के सामने टिक जाता है

मूल विषय एवं भाव

इन चार पदों का मूल विषय गोपियों की विरह-व्यथा, कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम तथा निर्गुण-योग का खंडन है। मुख्य भाव वियोग-श्रृंगार है — प्रिय से बिछोह की मार्मिक पीड़ा। साथ ही पद गोपियों की प्रखर बुद्धि, वाक्-चातुर्य एवं व्यंग्य से भी भरपूर हैं। पीछे एक गहरा दार्शनिक द्वंद्व चलता है — सगुण (साकार) भक्ति बनाम निर्गुण (निराकार) उपासना, जिसमें सूरदास स्पष्ट रूप से सगुण के पक्षधर हैं। इस प्रकार पद भाव एवं विचार — दोनों स्तरों

TOPIC

B

पदों का भावार्थ

TOPIC

चारों पदों का सार — क्रम से

पद 1 — मन की बात मन में रही

गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि बड़े भाग्य से उन्होंने अब तक प्रेम की सीधी डगर अपनाई थी, इस आशा में कि कभी कृष्ण लौटेंगे। परंतु अब तो योग-संदेश आ गया — उनके हृदय की प्रेम-भरी अभिलाषा मन में ही रह गई, होंठों तक न आ सकी। वे कहती हैं कि जैसे गुड़ से लिपटी चींटी न चिपकती है न छूट पाती है, वैसे ही उनकी दशा है — कृष्ण से न मिलन हो पा रहा, न मन उन्हें छोड़ पा रहा। यह विरह की चरम वेदना एवं मन की निरुपायता का मार्मिक चित्र है।

पद 2 — हारिल की लकड़ी

गोपियाँ अपने अनन्य प्रेम को 'हारिल की लकड़ी' के दृष्टांत से व्यक्त करती हैं — जैसे हारिल पक्षी सदा एक लकड़ी को पंजों में थामे रहता है, वैसे ही उन्होंने मन-वचन-कर्म से कृष्ण को थाम रखा है। जागते, सोते एवं स्वप्न में भी वे 'कृष्ण-कृष्ण' ही रटती हैं। ऐसे अनन्य-निष्ठ हृदय के लिए उद्धव का योग-संदेश 'कड़वी ककड़ी' एवं रोग (व्याधि) जैसा है, जिसे उन्होंने कभी न देखा, न सुना। वे व्यंग्य करती हैं कि यह 'जोग

पद 3 — बड़भागी का व्यंग्य

गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' (बड़े भाग्यवाले) कहकर तीखा व्यंग्य करती हैं। वे कहती हैं कि उद्धव कमल के पत्ते एवं तेल की गागर के समान हैं, जो जल में रहकर भी जल से अछूते रह जाते हैं — अर्थात कृष्ण के निकट रहकर भी उद्धव कभी प्रेम-रस में डूबे ही नहीं, इसीलिए विरह की पीड़ा से 'बचे' रहे। यह 'सौभाग्य' वस्तुतः प्रेमहीनता का उपहास है। गोपियाँ संकेत करती हैं कि जिसने प्रेम का सुख-दुख जाना

पद 4 — राजनीति का कटाक्ष

अंतिम पद में गोपियाँ कृष्ण पर भी कटाक्ष करती हैं। वे कहती हैं कि पहले तो कृष्ण प्रेम एवं मर्यादा का पालन करते थे, परंतु अब राजा बनकर वे 'राजनीति' (छल-कूटनीति) पढ़ने एवं पढ़ाने लगे हैं — योग-संदेश भेजकर उन्होंने प्रेम के अपने दायित्व से ही मुँह मोड़ लिया। गोपियाँ दृढ़ता से कहती हैं कि जिनके मन में कृष्ण की प्रेम-मूर्ति बसी है, उन्हें यह 'योग' कभी स्वीकार नहीं। इस प्रकार गोपियाँ साकार-प्रेम की रक्षा करते हुए उद्धव

TRY IT · SOLVE BEFORE YOU PEEK

गोपियाँ अपनी दशा को किस उदाहरण (दृष्टांत) से समझाती हैं कि वे न कृष्ण से मिल पा रही हैं, न उन्हें भुला पा रही हैं?

SOLUTION

ANSWER गोपियाँ कहती हैं कि उनकी दशा गुड़ से लिपटी चींटी जैसी है — जो न तो गुड़ से चिपककर तृप्त हो पाती है और न ही उसे छोड़कर मुक्त हो पाती है। इसी प्रकार वे न कृष्ण से मिल पा रही हैं, न मन उन्हें छोड़ पा रहा — यह विरह की निरुपाय वेदना का मार्मिक दृष्टांत है।

TOPIC

C

पात्र एवं भाव-विश्लेषण

TOPIC

प्रसंग के प्रमुख पात्र एवं उनका भाव

गोपियाँ

गोपियाँ इन पदों की केंद्रीय वक्ता हैं — कृष्ण से अनन्य, एकनिष्ठ प्रेम करने वाली ब्रजवासी स्त्रियाँ। वे केवल विरहिणी नहीं, अपितु प्रखर बुद्धि, वाक्-चातुर्य एवं व्यंग्य से सम्पन्न हैं। एक ओर उनके हृदय में गहन वियोग-वेदना है (मन की बात मन में रहना, गुड़-चींटी की दशा), दूसरी ओर वे उद्धव के शुष्क ज्ञान का तर्क एवं उपालंभ से खंडन कर उन्हें निरुत्तर कर देती हैं। वे सगुण साकार भक्ति की प्रबल पक्षधर हैं। गोपियों

उद्धव (उधौ)

उद्धव श्रीकृष्ण के ज्ञानी एवं विवेकशील सखा हैं, जिन्हें कृष्ण निर्गुण-योग का संदेश देकर गोपियों के पास भेजते हैं। वे निर्गुण-निराकार ब्रह्म के उपासक हैं और मानते हैं कि ज्ञान-योग से ही विरह शांत होगा। परंतु गोपियाँ उन्हें 'भ्रमर' एवं 'बड़भागी' कहकर व्यंग्य करती हैं कि वे प्रेम-रस से अछूते, निर्लिप्त हैं — कमल-पत्र एवं तेल की गागर जैसे। उद्धव का अहंकारी ज्ञान गोपियों के सहज प्रेम के सम्मुख पराजित हो जाता है। वे प्रसंग में 'निर्गुण ज्ञान' के

श्रीकृष्ण (परोक्ष)

श्रीकृष्ण पदों में प्रत्यक्ष उपस्थित नहीं, परंतु पूरे प्रसंग के केंद्र में हैं। वे मथुरा जाकर राजा बन चुके हैं और गोपियों के पास योग-संदेश भेजते हैं। गोपियाँ उन पर कटाक्ष करती हैं कि जो स्वयं प्रेम-मर्यादा के रक्षक थे, अब 'राजनीति' (छल) पढ़ाने लगे हैं। इस प्रकार कृष्ण गोपियों के अनन्य प्रेम के परम-इष्ट हैं, फिर भी उनके वियोग एवं उलाहने के कारण भी। वे सगुण-साकार भक्ति के आराध्य रूप में पूरे भ्रमरगीत को दिशा देते हैं।

भ्रमर (प्रतीक)

भ्रमर अर्थात भौंरा कोई पात्र नहीं, अपितु एक सशक्त प्रतीक है। संयोगवश एक भौंरा गोपियों के निकट मँडराने लगता है, और गोपियाँ उसी को सम्बोधित कर उद्धव पर परोक्ष व्यंग्य करती हैं — क्योंकि भौंरा भी एक फूल पर टिकता नहीं, अनेक पर मँडराकर रस लेकर उड़ जाता है, ठीक वैसे ही उद्धव (एवं कुछ अर्थों में कृष्ण) प्रेम में स्थिर नहीं। इसी प्रतीक के कारण इस पूरे प्रसंग का नाम 'भ्रमरगीत' पड़ा। यह सूरदास की प्रतीक-योजना की

THEOREM · LOAD-BEARING RESULT

केंद्रीय द्वंद्व — सगुण बनाम निर्गुण भक्ति

> *भ्रमरगीत का मूल वैचारिक द्वंद्व सगुण (साकार, गुण-सहित ईश्वर) बनाम निर्गुण (निराकार, गुणातीत ब्रह्म) भक्ति का है। गोपियाँ सगुण की पक्षधर हैं, उद्धव निर्गुण का संदेश लाते हैं — और इस संघर्ष में सगुण भक्ति विजयी होती है।*

STATEMENT

उद्धव गोपियों को निराकार ब्रह्म की उपासना एवं योग का उपदेश देते हैं। गोपियाँ तर्क देती हैं कि जिनका मन पहले से ही साकार कृष्ण को अनन्य रूप से सौंपा जा चुका है, उनके लिए निर्गुण-योग 'कड़वी ककड़ी' एवं 'व्याधि' के समान निरर्थक है। 'हारिल की लकड़ी' दृष्टांत द्वारा वे अपनी सगुण-निष्ठा

WHY THIS MATTERS

- इस द्वंद्व के बिना पाठ मात्र विरह-वर्णन रह जाता। सगुण-निर्गुण का यह संघर्ष भक्तिकाल की प्रमुख दार्शनिक बहस है, और सूरदास इसे गोपियों के पक्ष में सुलझाते हैं — साकार प्रेम-भक्ति को निराकार ज्ञान-योग से श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं। उच्च-अंक के उत्तरों में इस द्वंद्व का उल्लेख अनिवार्य है।

WATCH OUT FOR

NOTE इसे 'दोनों भक्ति समान हैं' न लिखें — पाठ स्पष्टतः सगुण-पक्षी है। निर्गुण की 'पराजय' एवं सगुण की 'विजय' को रेखांकित करना आवश्यक है।

THEOREM · LOAD-BEARING RESULT

केंद्रीय भाव — अनन्य प्रेम एवं विरह

> *इन पदों का केंद्रीय भाव गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य (एकनिष्ठ) प्रेम तथा उसके वियोग की मार्मिक पीड़ा है। यह प्रेम इतना दृढ़ है कि कोई ज्ञान, योग या तर्क उसे डिगा नहीं सकता।*

STATEMENT

गोपियाँ कहती हैं कि उन्होंने हारिल पक्षी की भाँति कृष्ण-रूपी लकड़ी को मन-वचन-कर्म से थाम रखा है; जागते-सोते-स्वप्न में वे केवल कृष्ण ही रटती हैं। उनकी विरह-दशा 'गुड़ से लिपटी चींटी' जैसी है — न मिलन, न विस्मरण। प्रेम की अभिलाषा मन में ही रह जाती है। यह अनन्यता एवं विरह-वेदना ही

WHY THIS MATTERS

- अनन्य प्रेम ही गोपियों की समस्त तर्कवाणी, व्यंग्य एवं अस्वीकृति की जड़ है। इसके बिना न उनका वाक्-चातुर्य समझ आता, न सगुण की विजय। यही भाव वियोग-श्रृंगार को जन्म देता है, जिस पर परीक्षा में नियमित प्रश्न आते हैं।

WATCH OUT FOR

NOTE अनन्यता को केवल 'प्रेम' तक सीमित न करें — इसमें एकनिष्ठता, दृढ़ता एवं विरह तीनों जुड़े हैं। 'हारिल की लकड़ी' एवं 'गुड़-चींटी' के प्रतीकों के बिना भाव अधूरा रहता है।

TOPIC

पाठ के चार प्रमुख भाव-बिंदु

अनन्य प्रेम की महिमा

इन पदों का सर्वप्रमुख भाव कृष्ण के प्रति गोपियों का अनन्य, एकनिष्ठ प्रेम है। 'हारिल की लकड़ी' के दृष्टांत द्वारा सूरदास सिद्ध करते हैं कि सच्चा प्रेम वह है जो मन-वचन-कर्म से एक ही इष्ट को थामे रहे — जागते, सोते, स्वप्न में भी। यह अनन्यता ही प्रेम की सर्वोच्च अवस्था है, जिसके सम्मुख कोई भी ज्ञान, योग या प्रलोभन निष्प्रभ हो जाता है। पाठ का संदेश यह है कि अनन्य भक्ति ही ईश्वर-प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

वियोग-श्रृंगार की मार्मिकता

दूसरा भाव विरह अर्थात वियोग-श्रृंगार है। कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ अपार वेदना में डूबी हैं — उनकी अभिलाषा मन में ही रह जाती है, वे 'गुड़ से लिपटी चींटी' की भाँति न मिल पाती हैं, न भूल पाती हैं। सूरदास इस विरह-पीड़ा को इतनी सहज एवं हृदयस्पर्शी भाषा में चित्रित करते हैं कि पाठक स्वयं द्रवित हो उठता है। यह वियोग-वर्णन सूरदास की श्रृंगार-रस की गहरी पकड़ का प्रमाण है।

सगुण भक्ति की विजय

तीसरा भाव सगुण (साकार) भक्ति की निर्गुण (निराकार) पर विजय है। उद्धव निर्गुण-योग का संदेश लाते हैं, परंतु गोपियाँ उसे 'कड़वी ककड़ी' एवं 'व्याधि' कहकर अस्वीकार कर देती हैं। वे तर्क देती हैं कि जिनका हृदय पहले से साकार कृष्ण को सौंपा जा चुका, उनके लिए निराकार-उपासना निरर्थक है। सूरदास गोपियों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं कि प्रेममय सगुण भक्ति शुष्क निर्गुण ज्ञान-योग से कहीं श्रेष्ठ एवं सहज है।

वाक्-चातुर्य एवं नारी-तेज़

चौथा भाव गोपियों का वाक्-चातुर्य एवं तर्कशक्ति है। वे विरहिणी होकर भी निरीह नहीं — उद्धव को 'बड़भागी' कहकर एवं कृष्ण पर 'राजनीति' का कटाक्ष करके वे दोनों को बौद्धिक रूप से परास्त कर देती हैं। उनके वचनों में व्यंग्य, उपालंभ एवं प्रखर तर्क का सुंदर सम्मिलन है। सूरदास इस वाक्-चातुर्य के द्वारा नारी की बुद्धि, तेज़ एवं निर्भीकता को भी रेखांकित करते हैं — गोपियाँ केवल भावुक नहीं, विचारशील भी हैं।

TOPIC

D

शिल्प एवं काव्य-सौंदर्य

TOPIC

सूरदास की भाषा-शैली एवं अलंकार

ब्रजभाषा की कोमलता

सूरदास की भाषा परिमार्जित, कोमल एवं मधुर ब्रजभाषा है, जो मथुरा-वृंदावन क्षेत्र की लोक-बोली है। इसमें माधुर्य, सरलता एवं संगीतात्मकता का अद्भुत मेल है। 'मधुकर', 'बड़भागी', 'हारिल' जैसे सहज शब्द एवं मुहावरेदार लोक-प्रयोग पदों को जीवंत बना देते हैं। ब्रजभाषा की कोमल ध्वनियाँ वियोग-श्रृंगार के मार्मिक भाव को व्यक्त करने के लिए सर्वथा उपयुक्त हैं। यही भाषा-माधुर्य सूरदास को कृष्णभक्ति-काव्य का शिखर-कवि

अनुप्रास अलंकार

पदों में अनुप्रास अलंकार की सुंदर छटा है — जहाँ एक ही व्यंजन-वर्ण की बार-बार आवृत्ति से नाद-सौंदर्य उत्पन्न होता है। 'मन की मन ही माँझ रही' में 'म' वर्ण की आवृत्ति, तथा 'मधुकर' जैसे शब्दों में ध्वनि-संगति अनुप्रास के सुंदर उदाहरण हैं। यह अलंकार पदों को गेय एवं संगीतमय बना देता है, जिससे भाव-संप्रेषण अधिक प्रभावी हो जाता है। परीक्षा में काव्य-सौंदर्य के प्रश्न में अनुप्रास का उदाहरण-सहित उल्लेख अंक दिलाता है।

दृष्टांत एवं रूपक

इन पदों का सर्वाधिक सशक्त शिल्प-तत्त्व दृष्टांत एवं प्रतीक/रूपक है। 'हारिल की लकड़ी' अनन्यता का, कमल-पत्र एवं तेल की गागर निर्लिप्तता का, 'गुड़ से लिपटी चींटी' विरह की निरुपायता का, तथा 'भ्रमर' उद्धव का प्रतीक है। 'जोग ठगौरी' में योग को ठगने वाली औषधि के रूप में रूपित किया गया है। इन दृष्टांतों एवं प्रतीकों से सूरदास गूढ़ भावों को अत्यंत सरल एवं सजीव बना देते हैं — यही उनकी विशिष्ट काव्य-कुशलता है।

गेय पद-शैली एवं वियोग-रस

सूरदास की रचनाएँ 'पद' शैली में हैं, जो गाने योग्य (गेय) हैं — इनमें राग-रागिनियों के अनुकूल लय एवं संगीतात्मकता है। प्रस्तुत पदों में प्रधान रस वियोग-श्रृंगार (विप्रलंभ-श्रृंगार) है, जो प्रिय से बिछोह की पीड़ा से उपजता है। साथ ही गोपियों के व्यंग्य में हास्य एवं तर्क का मिश्रण भी है। गेय शैली, वियोग-रस एवं सटीक प्रतीक-योजना मिलकर इन पदों को भक्ति-काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण बना देते हैं।

WORKED EXAMPLE

5 अंक — गोपियों ने योग-संदेश क्यों अस्वीकार किया

1. प्रसंग दें: 'कृष्ण ने उद्धव को निर्गुण-योग का संदेश देकर गोपियों के पास भेजा, ताकि वे विरह सह सकें।'
2. पहला तर्क— अनन्यता: 'गोपियों का मन हारिल की लकड़ी की भाँति कृष्ण को थामे है; जागते-सोते वे कृष्ण ही रटती हैं — अतः निर्गुण के लिए स्थान ही नहीं।'
3. दूसरा तर्क— योग की निरर्थकता: 'उनके लिए योग कड़वी ककड़ी एवं व्याधि है; वे व्यंग्य करती हैं कि यह जोग ठगौरी उन्हें ही क्यों बाँटी जा रही है।'
4. तीसरा तर्क— व्यंग्य/कटाक्ष: 'उद्धव को बड़भागी (कमल-पत्र जैसा निर्लिप्त) कहकर एवं कृष्ण पर राजनीति का कटाक्ष करके वे दोनों को निरुत्तर कर देती हैं।'
5. निष्कर्ष: 'इस प्रकार अनन्य प्रेम, योग की निरर्थकता एवं तीखे व्यंग्य के आधार पर गोपियाँ योग-संदेश अस्वीकार कर देती हैं — सगुण भक्ति की निर्गुण पर विजय।' — अस्वीकृति को 'अज्ञान' कभी न कहें।

TRY IT · SOLVE BEFORE YOU PEEK

गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' कहती हैं — क्या यह सचमुच प्रशंसा है? स्पष्ट कीजिए।

SOLUTION

ANSWER नहीं, यह सीधी प्रशंसा नहीं, अपितु तीखा व्यंग्य है। गोपियाँ कहती हैं कि उद्धव कमल-पत्र एवं तेल की गागर के समान प्रेम-जल में रहकर भी अछूते रहे — अर्थात वे कभी प्रेम में डूबे ही नहीं, इसीलिए विरह-पीड़ा से 'बचे' रहे। यह 'सौभाग्य' वस्तुतः प्रेमहीनता का उपहास है — उद्धव की निर्लिप्तता पर कटाक्ष।

TOPIC

पाठ का स्रोत एवं प्रसंग

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** ये पद सूरदास की वात्सल्य-लीला (बाल-कृष्ण) के पद हैं।

✓ **CORRECT** क्षितिज भाग-2 के ये चारों पद वात्सल्य के नहीं, बल्कि 'भ्रमरगीत' प्रसंग के वियोग-श्रृंगार के पद हैं। ये 'सूरसागर' से लिए गए हैं। प्रसंग — कृष्ण द्वारा भेजे गए उद्धव गोपियों को निर्गुण-योग का संदेश देते हैं, जिसे विरह-पीड़ित गोपियाँ अस्वीकार कर देती हैं। (सूरदास वात्सल्य के भी अप्रतिम कवि हैं, पर इस पाठ में मुख्य भाव विरह एवं अनन्य प्रेम है — दोनों को न मिलाएँ।)

TOPIC

'भ्रमरगीत' शब्द का अर्थ

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** भ्रमरगीत अर्थात भौंरे का सुंदर मधुर गीत/प्रशंसा।

✓ **CORRECT** 'भ्रमर' (भौंरा) यहाँ उद्धव का प्रतीक है — जैसे भौंरा एक फूल पर टिकता नहीं, अनेक फूलों पर मँडराता है, वैसे ही गोपियाँ उद्धव (एवं परोक्ष रूप से कृष्ण) पर निर्लिप्त-चंचलता का आरोप लगाती हैं। 'भ्रमरगीत' गोपियों द्वारा भौंरे को सम्बोधित कर कहे गए वे व्यंग्य-वचन हैं जिनमें वे अपने अनन्य प्रेम एवं उद्धव के शुष्क ज्ञान के बीच तर्क करती हैं। यह प्रशंसा-गीत नहीं, उपालंभ-गीत है।

TOPIC

'बड़भागी' का अर्थ

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** गोपियाँ उद्धव को सचमुच भाग्यशाली मानकर उनकी प्रशंसा करती हैं।

✓ **CORRECT** 'बड़भागी' (बड़े भाग्यवाले) कहना सीधा कथन नहीं, तीखा व्यंग्य है। गोपियाँ कहती हैं कि उद्धव कमल के पत्ते एवं तेल की गागर के समान हैं जो जल/प्रेम में रहकर भी उससे अछूते रह जाते हैं — अर्थात उद्धव कभी सच्चे प्रेम में डूबे ही नहीं, इसीलिए विरह की पीड़ा से 'बचे' रहे। यह 'सौभाग्य' वस्तुतः प्रेमहीनता का अभिशाप है। गोपियाँ व्यंग्य से उद्धव की निर्लिप्तता पर चोट करती हैं।

TOPIC

गोपियों का योग-संदेश अस्वीकार करना

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** गोपियाँ अज्ञानी हैं, इसलिए योग/ज्ञान को नहीं समझ पातीं और अस्वीकार कर देती हैं।

✓ **CORRECT** गोपियों की अस्वीकृति अज्ञान नहीं, सजग चयन है। वे जानती हैं कि निर्गुण-निराकार ब्रह्म की उपासना उन प्रेमी-हृदयों के लिए निरर्थक है जिन्होंने पहले से ही साकार कृष्ण को अपना सर्वस्व मान लिया है। वे तर्क देती हैं कि जिसका मन पहले से कृष्ण को सौंपा जा चुका, उसके लिए योग 'कड़वी ककड़ी' एवं 'व्याधि' है। यह अनन्य-प्रेम की दृढ़ता एवं बौद्धिक प्रतिवाद है, मूर्खता नहीं।

TOPIC

सगुण बनाम निर्गुण

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** इस पाठ में सगुण एवं निर्गुण दोनों भक्ति को समान रूप से सही ठहराया गया है।

✓ **CORRECT** भ्रमरगीत का मूल स्वर सगुण भक्ति की निर्गुण पर विजय है। सूरदास सगुणोपासक हैं — गोपियों के माध्यम से वे सिद्ध करते हैं कि साकार, सगुण कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम ही श्रेष्ठ है, और निराकार-निर्गुण ब्रह्म की उपासना प्रेमी-हृदय के लिए अनुपयुक्त है। उद्धव का निर्गुण-योग गोपियों के सम्मुख पराजित हो जाता है। अतः पाठ निष्पक्ष नहीं — स्पष्टतः सगुण-पक्षी है।

TOPIC

गोपियों का स्वर — विरह बनाम क्रोध

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** गोपियाँ केवल रोती-बिलखती विरहिणी हैं; उनमें कोई बुद्धि या तेज़ नहीं।

✓ **CORRECT** गोपियाँ विरहिणी अवश्य हैं, परंतु निरी असहाय नहीं। उनके वचनों में गहन वियोग के साथ-साथ तीव्र वाक्-चातुर्य, व्यंग्य, तर्क एवं उपालंभ भी हैं। वे उद्धव को बौद्धिक रूप से परास्त कर निरुत्तर कर देती हैं, यहाँ तक कि कृष्ण के राजनीतिक 'छल' पर भी कटाक्ष करती हैं ('अब अपनी राजनीति')। अतः गोपियों का चरित्र विरह + प्रखर बुद्धि + व्यंग्य-वाणी का सुंदर सम्मिलन है।

TOPIC

सूरदास का परिचय

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** सूरदास जन्म से अंधे एक साधारण भक्त-कवि थे, उनका कोई बड़ा ग्रंथ नहीं।

✓ **CORRECT** सूरदास (जन्म लगभग 1478 ई., सीही गाँव, दिल्ली के निकट) सगुणोपासक कृष्णभक्त एवं 'अष्टछाप' के आठ कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। वे वल्लभाचार्य के शिष्य थे। उनके तीन प्रमुख ग्रंथ हैं — 'सूरसागर' (सर्वाधिक प्रसिद्ध, भ्रमरगीत इसी में है), 'सूरसारावली' एवं 'साहित्य-लहरी'। वे वात्सल्य एवं श्रृंगार रस के अप्रतिम कवि माने जाते हैं। उनकी भाषा परिमार्जित ब्रजभाषा है। (जन्मांधता विवादास्पद है — पर ग्रंथ-कीर्ति निर्विवाद है।)

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

5 अंक — 'गोपियों ने उद्धव के योग-संदेश को क्यों अस्वीकार कर दिया? उनके तर्कों को स्पष्ट कीजिए।'

1	**प्रसंग एवं केंद्रीय कारण** 1 m	मथुरा जाकर श्रीकृष्ण ने अपने सखा उद्धव को गोपियों के पास निर्गुण-निराकार ब्रह्म एवं योग का संदेश देकर भेजा, ताकि गोपियाँ विरह सह सकें। परंतु गोपियों का प्रेम कृष्ण के साकार रूप से अनन्य रूप से बँधा है, अतः निराकार की उपासना उनके लिए असंभव एवं निरर्थक है — यही उनकी अस्वीकृति का मूल कारण है।
2	**पहला तर्क— अनन्य प्रेम (हारिल की लकड़ी)** 1 m	गोपियाँ कहती हैं कि उनका मन तो हारिल पक्षी की भाँति कृष्ण-रूपी लकड़ी को दृढ़ता से पकड़े हुए है; जागते-सोते, स्वप्न में भी वे 'कृष्ण-कृष्ण' ही रटती हैं। जब मन पहले ही कृष्ण को सौंपा जा चुका, तब निर्गुण-योग के लिए स्थान ही कहाँ बचा? यह अनन्यता ही उनकी सबसे बड़ी असमर्थता है।
3	**दूसरा तर्क— योग की अनुपयोगिता एवं पीड़ा** 1 m	गोपियों के अनुसार योग का यह कड़वा संदेश उनके लिए 'कड़वी ककड़ी' एवं रोग (व्याधि) के समान है, जिसे उन्होंने कभी न देखा, न सुना। वे व्यंग्य करती हैं कि यह 'जोग ठगौरी' (ठगने वाली योग-औषधि) उन्हें ही बाँटी जा रही है, जबकि वे पहले से ही विरह-रोग से पीड़ित हैं — योग उनकी पीड़ा घटाता नहीं, बढ़ाता है।
4	**तीसरा तर्क— उद्धव पर व्यंग्य एवं कृष्ण पर कटाक्ष** 1 m	गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' कहकर व्यंग्य करती हैं कि वे कमल-पत्र एवं तेल की गागर की भाँति प्रेम-जल में रहकर भी अछूते रहे — अर्थात कभी प्रेम में डूबे ही नहीं। वे कृष्ण पर भी कटाक्ष करती हैं कि जो स्वयं प्रेम-मर्यादा का पालन नहीं करते, वे अब 'राजनीति' (छल-नीति) पढ़ाने लगे हैं। यह तीखा वाक्-चातुर्य उद्धव को निरुत्तर कर देता है।
5	**निष्कर्ष — सगुण की विजय** 1 m	इस प्रकार गोपियाँ अनन्य प्रेम, योग की निरर्थकता एवं प्रखर व्यंग्य — तीनों आधारों पर योग-संदेश को अस्वीकार कर देती हैं। उनकी यह अस्वीकृति अज्ञान नहीं, सजग प्रेम-निष्ठा है। भ्रमरगीत का यही मूल संदेश है — साकार सगुण भक्ति की निराकार निर्गुण ज्ञान-मार्ग पर विजय।

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

5 अंक — 'गोपियों के वाक्-चातुर्य एवं व्यंग्य की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए (हारिल/बडभागी/राजनीति के सन्दर्भ में)।'

1	**वाक्-चातुर्य का परिचय** 1 m	गोपियाँ केवल विरहिणी नहीं, अपितु प्रखर बुद्धि एवं वाणी की चतुराई से सम्पन्न हैं। वे उद्धव के शुष्क ज्ञान-योग का खंडन व्यंग्य, तर्क एवं उपालंभ के सम्मिलित अस्त्रों से करती हैं और उन्हें निरुत्तर कर देती हैं। यही वाक्-चातुर्य भ्रमरगीत का सबसे आकर्षक तत्त्व है।
2	**अनन्यता का प्रतीक — हारिल की लकड़ी** 1 m	'हारिल की लकड़ी' के दृष्टांत द्वारा गोपियाँ अपने अनन्य प्रेम को व्यक्त करती हैं — जैसे हारिल पक्षी सदैव एक लकड़ी थामे रहता है, वैसे ही उन्होंने मन-वचन-कर्म से कृष्ण को थाम रखा है। यह सरल किंतु अत्यंत मार्मिक प्रतीक उनकी दृढ़ निष्ठा को सिद्ध कर देता है।
3	**व्यंग्य का शिखर — बड़भागी** 1 m	उद्धव को 'बड़भागी' कहना प्रशंसा का छद्म है। गोपियाँ कहती हैं कि उद्धव कमल-पत्र एवं तेल की मटकी की भाँति प्रेम-जल में रहकर भी निर्लिप्त रहे — अर्थात कभी प्रेम का सुख-दुख जाना ही नहीं। यह 'सौभाग्य' वस्तुतः प्रेमहीनता का उपहास है — व्यंग्य का चरम उदाहरण।
4	**कृष्ण पर कटाक्ष — राजनीति** 1 m	गोपियाँ कृष्ण पर भी कटाक्ष करती हैं — जो पहले प्रेम एवं मर्यादा का पालन करते थे, अब राजा बनकर 'राजनीति' (छल-कूटनीति) पढ़ाने लगे हैं; उन्होंने हमें योग-संदेश भेजकर अपने प्रेम-दायित्व से मुँह मोड़ लिया। यह कटाक्ष उनकी निर्भीक तार्किक वाणी को दर्शाता है।
5	**निष्कर्ष** 1 m	इस प्रकार दृष्टांत (हारिल), व्यंग्य (बड़भागी) एवं कटाक्ष (राजनीति) — तीनों के सम्मिलन से गोपियाँ उद्धव एवं कृष्ण दोनों को बौद्धिक रूप से परास्त कर देती हैं। सूरदास इस वाक्-चातुर्य के द्वारा सगुण प्रेम-भक्ति की श्रेष्ठता एवं नारी-वाणी के तेज़ को अत्यंत कुशलता से चित्रित करते हैं।

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

3 अंक — 'दिए गए पद का काव्य-सौंदर्य (भाव + अलंकार + भाषा) स्पष्ट कीजिए।'

1	**भाव-पक्ष** 1 m	पद का भाव गोपियों की विरह-व्यथा एवं कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम है। वे उद्धव के निर्गुण-योग को अस्वीकार कर अपने साकार-प्रेम की अटूट निष्ठा को व्यंग्य एवं उपालंभ के साथ प्रकट करती हैं — वियोग-श्रृंगार का मार्मिक चित्रण है।
2	**अलंकार-पक्ष** 1 m	पद में अनुप्रास अलंकार ('मधुकर'/'मन की मन ही'), दृष्टांत अलंकार ('हारिल की लकड़ी', कमल-पत्र, तेल की गागर) तथा रूपक/प्रतीक (भ्रमर = उद्धव) का सुंदर प्रयोग है। 'मन की मन ही माँझ रही' में अनुप्रास की छटा एवं भाव-गाम्भीर्य दोनों हैं।
3	**भाषा एवं निष्कर्ष** 1 m	भाषा परिमार्जित, कोमल एवं मधुर ब्रजभाषा है, जिसमें मुहावरेदार लोक-प्रयोग एवं संगीतात्मकता है। गेय पद-शैली, वियोग-श्रृंगार रस तथा सटीक प्रतीक-योजना मिलकर पद को सूरदास की काव्य-कुशलता का उत्कृष्ट उदाहरण बना देते हैं।

PYQ PATTERNS

Top PYQ patterns to drill

#1	गोपियों ने उद्धव के योग-संदेश को क्यों अस्वीकार कर दिया? उनके तर्कों को स्पष्ट कीजिए। (5 marks)	वार्षिक
#2	गोपियों ने स्वयं को 'हारिल की लकड़ी' एवं उद्धव को 'बड़भागी' क्यों कहा? व्यंग्य स्पष्ट कीजिए। (5 marks)	अधिकांश वर्षों में
#3	इन पदों के आधार पर गोपियों के वाक्-चातुर्य (वाणी की चतुराई) की विशेषता बताइए। (3 marks)	वार्षिक
#4	गोपियों के विरह/वियोग-वर्णन एवं उनकी मनोदशा का चित्रण कीजिए। (3 marks)	2019, 2020, 2023
#5	काव्यांश पढ़कर भावार्थ/काव्य-सौंदर्य/अलंकार बताइए। (4-6 marks)	लगभग प्रति परीक्षा

MARKS DISTRIBUTION

10-year marks distribution

10-YEAR PYQ MARKS DISTRIBUTION

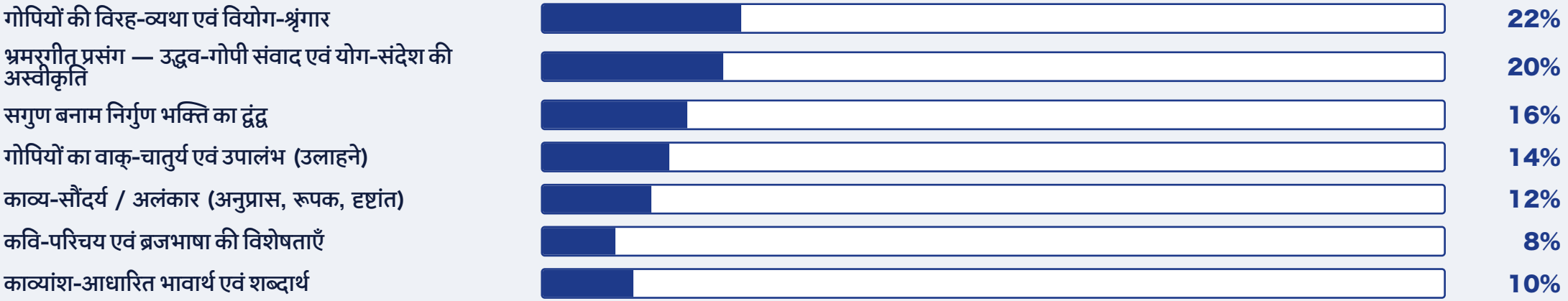

RECAP · MEMORISE THESE

स्मरणीय बिंदु

1 कवि-परिचय — सूरदास (जन्म लगभग 1478 ई., सीही) — सगुणोपासक कृष्णभक्त, अष्टछाप के सर्वश्रेष्ठ, वल्लभाचार्य के शिष्य। ग्रंथ — सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य-लहरी।

2 प्रसंग — भ्रमरगीत (सूरसागर से) — कृष्ण द्वारा भेजे उद्धव गोपियों को निर्गुण-योग का संदेश देते हैं; गोपियाँ अस्वीकार कर देती हैं।

3 प्रमुख प्रतीक — भ्रमर = उद्धव; हारिल की लकड़ी = अनन्यता; कमल-पत्र/तेल-गागर = निर्लिप्तता; गुड़-चींटी = विरह की निरुपायता।

4 केंद्रीय भाव — अनन्य प्रेम · वियोग-श्रृंगार · सगुण भक्ति की निर्गुण पर विजय · गोपियों का वाक्-चातुर्य एवं व्यंग्य।

5 व्यंग्य-बिंदु — 'बड़भागी' (उद्धव पर), 'जोग ठगौरी' (योग पर), 'अब अपनी राजनीति' (कृष्ण पर कटाक्ष)।

6 अंक-निधि — योग-अस्वीकृति — 88% परीक्षाओं में। हारिल/बड़भागी व्यंग्य — 80%। काव्य-सौंदर्य/अलंकार —

WHAT'S NEXT

अगला अध्याय

→ अध्याय 2 (काव्य) — राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद · तुलसीदास।

→ 15 MCQ की त्वरित-ड्रिल हल करें — लक्ष्य ⩾ 12/15।

→ 30 अंकी बोर्ड-पैटर्न पेपर लिखें — पूर्ण आदर्श उत्तरों के साथ अभ्यास करें।

आपने क्षितिज का पहला काव्य पाठ समाप्त किया।

अनन्य प्रेम · सगुण-निर्गुण द्वंद्व · वाक्‌चातुर्य — अब बोर्ड में सिद्ध कीजिए।

readyforboards.com

Helpline: +91 70330 05444

Boards prep that builds confidence, not anxiety.